225 (क) लेख भ्रष्टाचार, समस्या और समाधान

225 (ख) लेख बाबा रामदेव उत्थान और पतन

225 (ग) लेख कायरता की पटकथा पर माओवाद का मातम

–संजय द्विवेदी

225 (घ) प्रश्नोत्तर श्री चिन्मय व्यास, मालदेवता , देहरादून, उत्तरांचल

225 (च) प्रश्नोत्तर **(2) श्री राजेन्द्र भारतीय, महालक्ष्मी नगर , इन्दौर म0प्र0**

225 (छ)प्रश्नोत्तर श्री ओमपाल सिंह जी मेरठ

225 (ज) प्रश्नोत्तर **श्री ओमपाल सिंह जी मेरठ**

225 (झ) प्रश्नोत्तर **श्री ओमपाल सिंह जी मेरठ**

225 (ट) कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर– परमाणु उर्जा पर

भ्रष्टाचार, समस्या और समाधान

आज संपूर्ण भारत मे भ्रष्टाचार सर्वाधिक चर्चा का विषय बना हुआ हैं। ऐसा लगता है कि भारत की सबसे बडी समस्या भ्रष्टाचार है । रामदेव जी के अनशन और अन्ना हजारे के आंदोलन ने इस विषय को और भी ज्यादा गंभीर बना दिया है। हर आदमी इस बीमारी की चर्चा करने लगा है। किन्तु यदि गहराई से सोचा जाय तो भ्रष्टाचार की समस्या वैसी नहीं जैसी दिखती है अथवा जिस तरह प्रचारित की गई है।

भारतीय राजनीति का एक सर्वमान्य चरित्र है कि वह (1) समाज रूपी बिल्लियो के बीच स्वयं को बंदर के रूप मे मानती है (2) राजनीति किसी भी समस्या का समाधान विपरीत आचरण वाली व्यवस्था से खोजती है। बिल्लियों के बीच बंदर की भूमिका इस प्रकार होती है कि वह बिल्लियों की रोटी को कभी बराबर नही होने देता किन्तु बंदर इतना चालाक होता है कि वह हमेशा बिल्लियों की रोटी बराबर करता हुआ दिखना चाहता है भले ही रोटी कभी बराबर न हो । बंदर यह भी प्रयास करता है कि छोटी रोटी वाली बिल्ली के मन मे असमानता रूपी असंतोष की ज्वाला निरंतर जलती रहे। भारतीय राजनीति पूरी इमानदारी से तीनो प्रयत्न करती रहती है। स्वतंत्रता के तत्काल बाद ही समाजवाद के नाम पर आर्थिक विषमता दूर करने के गंभीर प्रयत्न शुरू हुए जो अब तक जारी है किन्तु आर्थिक विषमता लगातार बढती रही। साथ ही हमारे राजनेताओ ने गरीबों के मन मे सम्पन्नों के विरूद्ध असंतोष की ज्वाला भी लगातार सफलता पूर्वक जलाए रखी। इसी तरह भारतीय राजनीति ने प्रयत्न किया कि आर्थिक समस्याओं का आर्थिक समाधान, प्रशासनिक समस्याओं का प्रशासनिक समाधान तथा सामाजिक समस्याओ का सामाजिक समाधान किसी भी परिस्थिति मे न हो। राजनैतिक व्यवस्था निरंतर सक्रिय रही कि आर्थिक समस्याओ का सामाजिक प्रशासनिक समाधान हो, सामाजिक समस्याओ का आर्थिक प्रशासनिक समाधान हो तथा प्रशासनिक समस्याओ का सामाजिक आर्थिक समाधान हो। आर्थिक असमानता आर्थिक समस्या है। भारतीय राजनैतिक व्यवस्था आर्थिक असमानता कालेधन अथवा भ्रष्टाचार को प्रशासनिक तरीके से हल करना चाहती है जबकि आतंकवाद नक्सलवाद को आर्थिक सामाजिक तरीके से हल तथा दहेज बाल विवाह शराब जुआ आदि को आर्थिक प्रशासनिक तरीके से हल करने की कोशिश करती है।

इन सबके साथ साथ राज्य का यह भी चरित्र होता है कि वह समस्याओ को हल करता हुआ तो दिखे किन्तु होने न दे। राज्य हमेशा ऐसे समाधान की कोशिश करता है कि उक्त सामाधान से ही एक नई समस्या का जन्म हो और राज्य उक्त नई पैदा समस्या के समाधान मे इस तरह सक्रिय हो कि उससे एक और नई समस्या पैदा हो। नई नई समस्याए पैदा होती रहे और राज्य उन समस्याओ के समाधान के नाम पर समाज के अधिकारों मे थोडी थोडी कटौती करता रहे। स्वतंत्रता के बाद के साठ बासठ वर्षो से यही क्रम चल रहा है जो आज भी यथावत जारी है। आर्थिक विषमता आर्थिक प्रयत्नों के आधार पर दूर होनी चाहिये थी किन्तु राज्य ने आर्थिक विषमता दूर करने के लिये समाजवाद का नारा देकर प्रशासनिक कानून बनाने शुरू कर दिये। प्रशासनिक व्यवस्था यदि आर्थिक समस्याओ के समाधान मे सक्रिय होती है तो भ्रष्टाचार के अवसर पैदा करती है। भ्रष्टाचार का एक ऐसा चक्र चल पडता है कि दोनो एक दूसरे के पूरक बन जाते है। अन्डे से मुर्गी और मुर्गी से अन्डा। राजनीतिज्ञ कभी यह निर्णय नही होने देता कि अन्डा या मुर्गी में से मारने की पहल कहॉ से करे?

जब संपूर्ण विश्व जानता है कि भ्रष्ट व्यवस्था समाजवाद नही ला सकती। इसके विपरीत भ्रष्टाचार आर्थिक विषमता दूर करने मे सबसे बडी बाधा है। ये इतने पढे लिखे नेता नेहरू, अम्बेडकर, लोहिया आदि इस बात को क्यो नही समझ सके कि पहले भ्रष्टाचार कम करना होगा और उसके बाद समाजवाद की दिशा में बढ सकते है। स्वतंत्रता के बाद तत्काल ही भ्रष्टाचार बढने लगा। हमारे नेता गण समाजवाद की दिशा मे तेजी से चलने लगे। ये लोग जितनी ही समाजवाद की दिशा मे तेज छलांग लगाते उससे कई गुना अधिक तेज गति से भ्रष्टाचार बढता और भ्रष्टाचार के परिणाम स्वरूप आर्थिक विषमता बढती जाती । मै नही कह सकता कि ये बडे बडे नेता इस बात को समझ नही पा रहे थे अथवा समझना नही चाहते थे। पुरानी बातों को तो छोडिये। आज सोनियॉ जी, दिग्विजय सिंह, सुषमा स्वराज्य, प्रकाश करात, आदि भ्रष्टाचार दूर करने की बात बहुत करते है किन्तु समाजवाद के प्रयत्न साथ मे लेकर । स्पष्ट है कि ऐसा होना बिल्कुल असंभव है। आर्थिक विषमता दूर करने के कोई भी प्रयत्न तंत्र को अधिक अधिकार सम्पन्न बनायेंगे ही और तंत्र की यह अधिकार वृद्धि ही भ्रष्टाचार रूपी विष बेल की खाद पानी का काम करती है। एक राष्ट्रीय सलाहकार परिषद बना दी गई है । यह परिषद नित नये नये समाजवादी प्रस्ताव लाती है। गरीबों को इतना अनाज दो, इतनी सुविधा दो, अमीरों पर इतना क्रय विक्रय कर लगाओ। यह सुविधा यह कारारोपण किसके माध्यम से होगा? क्या इससे तंत्र का लोक मे हस्तक्षेप नही बढेगा ? क्या इससे भ्रष्टाचार नही बढेगा? ये कहते है कि भ्रष्टाचार रोको । इनसे पूछा जाय कि भ्रष्टाचार रोकने के लिये क्या यही भ्रष्ट तंत्र सफल होगा? पहले भ्रष्टाचार दूर करें कि पहले तुम्हारा समाजवाद लावे? दोनो साथ साथ संभव नही क्योकि दोनो एक दूसरे के पूरक है।

एक है बाबा रामदेव। इन्हे शरीर विज्ञान का क्या ज्ञान हो गया कि ये अपने को समाजशास्त्र राजनीति शास्त्र का भी ज्ञाता समझने लगे। जबकि सच्चाई यह है कि इन्हे राजनीति शास्त्र का तो ज्ञान शुन्य ही है किन्तु समाज शास्त्र का ज्ञान भी न के बराबर है। भारत के विदेशो से काला धन वापस लाया जावे। इस बात के पीछे पडे है । इन्हे यह भी पता नही कि काला धन क्या है, कैसे बनता है, क्या परिणाम होता है तथा वर्तमान मे बनकर बाहर जा रहा है कि नही? भारत मे स्वतंत्रता के बाद काला धन उसी दिन से बनना शुरू हुआ जबसे समाजवाद की धुन सवार हुई। स्वतंत्रता के बाद भारत मे सन सैतालीस मे दो हजार रू वार्षिक आय पर उन्नीस प्रतिशत तथा बीस हजार से अधिक पर छियासी प्रतिशत इन्कम टैक्स लगता था। हमारे नेताओ ने सन बावन तक यह टैक्स रेट बढाकर चार हजार की आय पर सवा बाइस प्रतिशत तथा चालीस हजार से उपर की आय पर बान्नवे प्रतिशत कर दिया। इस कर के उपर सरचार्ज भी लगाया गया। कुल इन्कम टैक्स पंचान्नवे प्रतिशत तक हो गया। आप कल्पना कर सकते है कि समाजवाद के नाम पर पागल सरकार ने यह नही सोचा कि इतने कराधान से भारत मे भ्रष्टाचार बढेगा, कालाधन बढेगा, अव्यवस्था हो जायगी। इन्हे तो बस निकम्मे प्रशंसकों तथा रूस चीन की वाहवाही मात्र चाहिये थी। परिणाम हुआ कि भ्रष्टाचार बढा, कालाधन बढा, अव्यवस्था बढी। इन लोगो ने समाज मे यह धारणा भी फैलाई कि न परिश्रम से धन बढ सकता है न बुद्धि से। धन तो सिर्फ धूर्तता या अपराध से ही बढ सकता है। इस प्रचार का परिणाम हुआ कि धूर्तता और अपराध की ओर आम लोग अधिक बढे। सरकार के पास पैसा बढा तो उसके पास चापलूस निकम्मे परजीवियों की फौज इकट्ठी हुई जो समाजवाद की माला जपती रही और बिना मेहनत के सरकारी मेहमान बन गई।

स्पष्ट है कि जब तक भ्रष्टाचार पर अंकुश नही लगेगा तब तक हमारी कोई भी योजना सफल नही हो सकती। भ्रष्टाचार राजनैतिक व्यवस्था की सबसे बडी बीमारी है । इसके साथ साथ यह भी स्पष्ट है कि जब तक समाज की सामाजिक समस्याओ के समाधान मे तंत्र की भूमिका नही घटती तब तक भ्रष्टाचार कम हो ही नहीं सकता । हमारे पास आर्थिक विषमता रोकने का तब तक कोई उपाय नही जब तक भ्रष्टाचार न घटे । यदि भ्रष्टाचार के रहते आर्थिक विषमता रोकने के प्रयत्न जारी रहे तो भष्टाचार बढना निश्चित है। हमे कुछ समय के लिये भ्रष्टाचार और आर्थिक विषमता मे से एक को चुनकर उस के समाधान मे ताकत लगानी होगी और स्पष्ट है कि

ऐसी हालत मे भ्रष्टाचार को रोकना ज्यादा कारगर कदम होगा। कालाधन आज भी बन रहा है और बाहर जा रहा है। ना समझ लोग कालाधन लाने का आंदोलन कर रहे है। पहले भारत मे कालाधन बनना तो रोको। कालाधन बनता रहे, विदेशी बैको मे जाता रहे और हम वापस लाने की लडाई लडते रहे । काले धन का बनना भी रूक सकता है और बाहर जाना भी यदि हम एक बार कुछ समय के लिये सुरक्षा और न्याय को छोडकर सारे खर्च रोक दें। इससे इन्कम टैक्स का रेट घटकर पांच प्रतिशत तक का हो सकता है या शुन्य भी संभव है। देखिये कि कालाधन भारत मे लौटता है कि नही। देखिये कि भ्रष्टाचार घटता है कि नही। मै मानता हूँ कि इस कदम से गरीब और अमीर के बीच की खाई बहुत चौडी होगी। किन्तु हम दोनो काम एक साथ कर ही नही सकते। ऐसी हालत मे हमें कुछ स्पष्ट निर्णय तो लेने ही होगें। यदि टैक्स खतम करने से सारी समस्या दूर हो सकती है तो हमारे दो महत्वपूर्ण प्राण अन्ना जी और रामदेव जी की जान जोखिम मे क्यों डाली जाय। यदि साठ वर्ष तक समाजवाद नही आया ,गरीब अमीर के बीच की खाई बढती रही तो पांच वर्ष और झेल लेंगें। कम से कम भ्रष्टाचार और कालेधन से तो छुटकारा मिलेगा। अन्ना जी की टीम तो इस दिशा मे कुछ समझ भी रही है किन्तु रामदेव जी तो इस लाइन पर सोचना ही नहीं चाहते । सरकार मे भी मनमोहन सिंह जी की टीम इस लाइन पर काम करना चाहती है किन्तु राहुल गांधी की टीम इसके ठीक विपरीत सोंच रही है। परिणाम यह होगा कि न समाजवाद आयगा न ही भ्रष्टाचार और कालाधन रूकेगां ।भारत की राजनैतिक व्यवस्था मे इतनी ताकत नही कि वह समाजवाद का इतना बडा पत्थर पैर मे बांधकर सरपट दौड लगा सके।

मेरे विचार मे तो समस्याओ के समाधान की शुरूआत यही से संभव है कि कुछ समय के लिये आर्थिक विषमता की छूट कर दी जावे, जनकल्याण के कार्यो पर खर्च न्यूनतम हो, अधिकतम निजीकरण कर दे, टैक्स वसूली के प्रयत्न कम कर दे, इन्कम टैक्स न्यूनतम कर दे। साथ ही राष्ट्रीय सलाहकार परिषद जैसी परजीवी संस्थाओ को कुछ समय के लिये रोक दे या उसका स्वरूप बदल दे । यदि हमने ऐसे कुछ कदम उठा लिये तो अनेक समस्याएँ अपने आप सुलझनी शुरू हो जायगी।

याद रखिये कि पहले अंडा कि पहले मुर्गी यह निर्णय करना ही होगा । साठ बासठ वर्षो से निकम्मे लोगों ने यह निर्णय नही होने दिया। एक गुट अण्डा से पहल करना चाहता है तो दूसरा मुर्गी से । हम एक स्पष्ट निर्णय लेना शुरू करे तभी इन समस्याओ का समाधान संभव है।

बाबा रामदेव उत्थान और पतन

रामदेव जी का उत्थान जिस तेज गति से हुआ, पतन की गति उससे भी बहुत ही तेज थी । ऐसा लगा जैसे एकाएक गुव्वारा फूट गया हो और गुव्वारे की हवा को पकडते पकडते रामदेव जी खुद ही तबाह हो गये हों । रामदेव जी ने जिस महल को खड़ा करने मे इतने वर्ष लगाये थे वह महल राजनैतिक वजन न सम्हालने के कारण एकाएक हिलने लगा और बाबा रामदेव जान बचाकर उस से बाहर कूद गये । रामदेव जी बडी शान्ति से अपने योग व्यवसाय मे सफलता और सम्मान पूर्वक बढ रहे थे। एकाएक उन्हे क्या सूझी कि उन्होने लालच मे आकर राजनीति रूपी कंबल को पकड लिया। किन्तु वह काला कम्बल न होकर भालू निकला। अब रामदेव जी तो कम्बल को छोडना चाहते हैं किन्तु वह भालु रूपी कम्बल रामदेव जी को छोडने को तैयार नहीं।

बाबा रामदेव न कभी सन्त रहे न हैं। पांच वर्ष पूर्व ज्ञानतत्व एक सौ सात मे मैने रामदेव जी की समीक्षा की थी। मेरी वह समीक्षा इस प्रकार थी । (प्राचीनकाल से ही भारत में स्वास्थ्य में योग के महत्व को बढ–चढ कर स्थान दिया गया । योग को शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक समस्याओं तक का समाधान बनाने के प्रयत्न में योग के शारीरिक, मानसिक प्रभाव सूत्र आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार के पूर्व ही यम और नियम के पालन की अनिवार्यता घोषित की गई। योग के विषय में सामान्य–सा ज्ञान रखने वाला भी जानता है कि यम और नियम का आंशिक पालन ही सामाजिक समस्याओं का अच्छा समाधान है तो पूरी तरह पालन की तो बात ही अलग है। समाज में ज्यों–ज्यों चरित्र की गिरावट आती गयी, त्यों–त्यों यम और नियम पालन कठिन होता गया और धीरे–धीरे यम और नियम पालन असंभव होने से आसन, प्राणायाम प्रत्याहार के स्वास्थ्य वर्धक योग प्रयोग भी कमजोर पडे।

भारत में अनेक योग प्रमुखों ने यम नियम को छोडकर योग की शिक्षा देनी शुरू की किन्तु वे लोग भी योग को उतना सर्वसुलभ नही कर सकें, क्योकि वे लोग योग के शारीरिक लाभ की अपेक्षा मानसिक लाभ पर अधिक जोर देते रहे। बाबा रामदेव ने माना कि योग को सामाजिक, मानसिक लाभ की जटिल प्रक्रिया से निकालकर यदि शारीरिक लाभ तक सीमित कर दिया जाये तो यह सर्व सुलभ हो सकता है तथा धीरे धीरे अप्रत्यक्ष रूप से इसका मानसिक सामाजिक प्रभाव भी संभव है। रामदेव जी ने बहुत तेज गति से इस दिशा में काम शुरू किया। आसन और प्राणयाम को इन्होंने परिवर्तन का मुख्य सूत्र बनाया और प्रत्याहार को भी उसके साथ जोड़ लिया। उन्होंने अपने संशोधित योग प्रयत्न के प्रचार प्रसार के लिए अत्याधुनिक मीडिया तकनीक का भी भरपूर उपयोग किया। उनके प्रयत्न और प्रचार–प्रसार का व्यापक प्रभाव हुआ। सारे भारत में स्वास्थ्य के लिए योग की महत्ता को स्वीकार किया गया। बडे से छोटे तक में योग से स्वास्थ्य की दिशा में सक्रियता बढी। अनेक मुसलमान भी छिप–छिप कर योग करने लगे। भारत की यह चमत्कारिक अनुगूँज सम्पूर्ण विश्व में सुनायी देने लगी। अनेक सरकारें स्वास्थ्य के लिए योग के सस्ते, स्वाभविक, सुलभ और प्राकृतिक तरीके की ओर आकर्षित भी हुई। भारत में बडी संख्या में साधारण लोग भी योग की शिक्षा देने और लेने लगे। वर्तमान में पहली बार योग योगियों से निकलकर सामान्य नागरिक के घर तक पहुँचा। योग के प्रत्यक्ष प्रभाव से सामान्य जन ने स्वास्थ्य लाभ किया यह निर्विवाद है। साथ ही योग के अप्रत्यक्ष प्रभाव का मानसिक और सामाजिक लाभ भी दिखने लगा–यह भी निर्विवाद ही है।

रामदेव जी के योग के व्यापक प्रभाव से उनको अप्रत्याशित ख्याति भी मिली और धन भी। बडे–बडे व्यापारी भी रामदेव जी के इर्द–गिर्द मंडराने लगे। रामदेव जी भी अपनी ख्याति का लोभ संवरण नही कर सके। उन्होंने अपने योग का विस्तार आयुर्वेद तक कर दिया और आम लोगों को आयुर्वेदिक दवाओं के नुस्खे बताते–बताते आयुर्वेदिक दवा निर्माण तक जा पहुँचें। सन्यासी बाबा रामदेव यम के पांच प्रारंभिक सूत्र, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह में से अपरिग्रह को भूल बैठे। उन्होने धन इकट्ठा किया या नहीं यह तो मुझे पता नही, किन्तु जिस तरह उन्होंने योग से आयुर्वेद की ओर दिशा मोड़ी और आयुर्वेद से आगे जाकर भारतीय संस्कृति की सुरक्षा की ओर छलांग लगाई वह उनकी सांसारिकता की दिशा मानी जा सकती है। ये सारी दिशाएँ गलत नहीं थीं क्योंकि ये दिशाएँ लोक कल्याणकारी थीं किन्तु लोक कल्याण के लिए भी उन्होंने जिस सीमा तक स्वयं को आयुर्वेदिक दवा कारखाने के साथ जोडा वह उनकी भूल मानी जानी चाहिए।

रामदेव जी ने जिस तरह विदेशी पेयों का विरोध किया उसका न योग चिकित्सा से संबंध था न ही आयुर्वेद से। यदि आयुर्वेद के लिए शीतल पेय का विरोध करते होते तो उसकी भाषा भिन्न होती किन्तु रामदेव जी का विदेशी शीतल पेय विरोध आयुर्वेद से अधिक स्वदेशी पर केन्द्रित था। स्वाभाविक ही था कि रामदेव जी के प्रचार ने अनेक प्रकार के दुकानदारों को चिन्तित किया। रामदेव जी के योग से तो बहुत कम दुकानदार प्रभावित थे, किन्तु इनके आयुर्वेद और स्वदेशी से अनेक पेशेवर एलोपेथी वाले, विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियॉ तथा विदेशी राजनीति करने वालों के समक्ष खतरा मंडराने लगा। रामदेव जी के स्वदेशी और भारतीय संस्कृति के धुंआधार प्रचार ने साम्यवादी विचारधारा को भी चिन्तित किया। साम्यवाद ने रामदेव जी के आयुर्वेदिक दवा कारखने में कानूनी अनियमितताओं के सहारे तोड़–फोड़ शुरू कर दी। ऐसे कारखानों में श्रम कानूनों का उल्लंघन होता ही है। ऐसा एक भी कारखाना नहीं जो सभी कानूनों का अक्षरशः पालन कर सके। मजदूरों में अपनी घुसपैठ बनाकर साम्यवादियों ने बाबा रामदेव की दवा कारखानों की गतिविधियों की गुप्त जानकारी भी ली और धीरे–धीरे जानकारी एकत्रित करके एक दिन उसका विस्फोट कर दिया।

आयुर्वेदिक दवा कारखाने में मजदूर हितों का उल्लंघन सामान्य भारतीय के मन में रामदेव जी की छवि गिराने के लिए अपर्याप्त मानकर ही साम्यवाद ने दवा में पशु और मानव हड्डी के प्रयोग जैसे ब्रम्हास्त्र का प्रयोग किया। मैं नही कह सकता कि साम्यवादियों का उद्देश्य अपने मजदूरों के हित से अधिक जुडा था या रामदेव जी की प्रतिष्ठा के आघात से। किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि साम्यवादी भी अपने कार्य को मजदूरों से बढ़ाते–बढ़ाते रामदेव पतन तक उसी तरह भ्रम में बढ़ाते चले गये जिस भ्रम में रामदेव जी ने योग से आयुर्वेद और आयुर्वेद से भारतीय संस्कृति रक्षण तक बढ़ाया था। किन्तु अपूर्ण तैयारी और साम्यवाद की सामाजिक विश्वसनीयता के अभाव ने उनके ब्रम्हास्त्र के प्रभाव को विफल कर दिया। साम्यवादियों ने जो आक्रमण किया उसमें कई कमजोरियॉ थीं

क. उनका आक्रमण रामदेव जी के कानूनी उल्लंघन तक सीमित था। दवा में पशु या मानव हड्डी का प्रयोग हुआ यह आयुर्वेदिक दवाओं के लिए बहुत अधिक चौंकाने वाली बात नहीं थी। यह मात्र एक कानून का उल्लंघन था कि दवा पर जानकारी लिखना कानूनी बाध्यता है।

ख. साम्यवादी रामदेव जी की कानूनी अनियमितताओं को जितना गंभीर विषय बनाना चाहते थें, उसमें उसने स्वयं ही कानूनी प्रक्रियाओं की अनदेखी करने की भूल कर दी। दवा किसी शासकीय व्यवस्था के अन्तर्गत खरीदकर तथा सील कराकर जॉच करानी चाहिए थी जो उन्होंने इस तरह पूरी की जैसे बंगाल में जॉच हो रही हो। इस कमी के कारण रामदेव जी को नमूने इन्कार करने का मजबूत बहाना मिल गया।

ग. साम्यवादी विदेशों से धन लेकर राजनीति करने के लिए विख्यात है। फिर भी आजतक इन पर ऐसा कोई आरोप नहीं कि इन्होंने कभी पूँजीवादी देशों या कम्पनियों से धन लिया हो किन्तु विश्वसनीयता के अभाव ने रामदेव जी को प्रचारित करने का अवसर दे दिया कि साम्यवादियों ने बहुराष्ट्रीय कंपनियों से साठगांठ की है।

घ. साम्यवादियों की भारतीय सांस्कृतिक गतिविधियों के विरूद्व सोच सर्वविदित है। मांसाहार या आयुर्वेद के विषय में इनकी सोच कभी सकारात्मक नहीं रही। भारतीय सांस्कृतिक भावना की सुरक्षा की इतनी चिन्ता को भारतीय जनमानस स्वाभाविक सोच से अधिक कोई खराब नीयत समझ रहा था। क्योंकि साम्यवाद ने ऐसे ही अन्य सामानों की कभी चिन्ता नहीं की। यदि साम्यवादी वृन्दा जी की अपेक्षा किसी साधु संन्यासी के मुँह से यह रहस्योद्घाटन कराने की चालाकी करते तो शायद कुछ अधिक प्रभाव होता। किन्तु संस्कृति विरोध के लिए प्रसिद्ध संगठन द्वारा आक्रमण किये जाने से रामदेव जी को प्राकृतिक विश्वसनीयता का लाभ हुआ।

च. रामदेव जी के प्रचार से योग, आयुर्वेद और स्वदेशी की भावना को व्यापक विस्तार मिल रहा था। सामान्य लोगों ने रामदेव जी पर आक्रमण को योग, आयुर्वेद तथा स्वदेशी के विरूद्ध षड़यंत्र माना। विशेषकर तब, जब ऐसा आक्रमण योग, आयुर्वेद और स्वदेशी के विपरीत सोच और आचरण वाले संगठन और व्यक्ति द्वारा किया जावें।

कुल मिलाकर रामदेव जी पर साम्यवादियों का आक्रमण साम्यवादियों के लिए ही घातक हुआ। साम्यवादी अब तक सम्पूर्ण विश्व की राजनीति में सुनियोजित और दीर्घकालिक योजना अनुसार काम करने के लिए प्रसिद्ध हैं। किन्तु इस बार या तो उनकी योजना फेल हुई या वृन्दा जी ने अकेले की योजना पर ही इतना बड़ा आक्रमण कर दिया। कुछ भी हो लेकिन साम्यवाद को इस अनावश्यक और बचकानी हरकत से बहुत क्षति हुई है। लालू प्रसाद यादव ने इस विषय पर सबसे अधिक स्वाभाविक और स्पष्ट टिप्पणी की कि दवा यदि मानव हित में है तो यह चिंता का विषय नहीं कि उसमें मानव की हड्डी मिली है या दानव की। अन्य राजनेताओं ने भी जनभावना का आदर किया और रामदेव जी के पक्ष में आवाज उठाई।

इस घटना ने रामदेव जी को तात्कालिक लाभ और दूरगामी क्षति पहुँचाई है। उन्होंने आक्रमण को सफलता पूर्वक झेलकर स्वयं को विजेता के रूप में स्थापित किया है किन्तु इस संघर्ष में उन्हें कई स्थानों पर सत्य का गला भी घोटना पड़ा है। रामदेव जी को कई बार यह असत्य दुहरानां पड़ा कि ये दवाएँ उनके कारखाने की नहीं है। उन्हें कई बार यह कहना पड़ा कि वे श्रम कानूनों का पूरी तरह पालन करते है। उन्हें कई बार यह भी कहना पड़ा कि उनकी दवाओं में मानव या पशु की हड्डियों का कोई अंश नही है।

मैं मानता हूँ कि भारत के कानूनी जाल से बचने के लिये असत्य बोलना एक मजबूरी है किन्तु ऐसी असत्य की मजबूरी से भी आत्मबल तो घटता ही है। अब रामदेव जी विदेशी कंपनियों पर या एलोपैथी पर उतना तीव्र और प्रभावशाली आक्रमण नहीं कर पायेंगे जितना वे पहले करते थें क्योंकि स्वामी जी के योग के यम और नियन से सत्य भी संदेहास्पद हो गया है, अपरिग्रह तो खतरे में था ही। मैं चाहता हूँ कि स्वामी रामदेव जी ने विश्व को स्वास्थ्य के लिये योग का चमत्कारिक नुस्खा देकर जो प्रतिष्ठा प्राप्त की है तथा जनकल्याण किया है उसे विश्व विजेता बनने की दौड़ में क्षति न पहुँचाई जाये।)

मैने जिस समय यह समीक्षा की थी वह पांच वर्ष पूर्व का समय था। उस समय से लेकर चार जून की घटना तक मुझे छोडकर किसी ने रामदेव जी की इतनी स्पष्ट समीक्षा नही की । मेरे लेख के बाद तो उनके सम्मोहन तथा प्रशंसको मे कई गुना वृद्धि हुई है । यहॉ तक कि कुछ लोग तो रामदेव जी के अन्दर एक समाज शास्त्री की छवि देखने लगे थें। मैने उसके बाद भी कई बार लिखा कि रामदेव जी को शरीर विज्ञान का ज्ञान तो है किन्तु समाज शास्त्र का उन्हे बिल्कुल ज्ञान नहीं । रामदेव जी ने अपार धन एकत्रित किया और अन्त तक करते रहे । वे यह भूल गये कि किसी व्यापारी धनवान को राजनैतिक आंदोलन का नेतृत्व कभी नही करना चाहिये। इतिहास बताता है कि व्यापारी पूंजीपतियों ने हमेशा पीछे रहकर सत्ता संघर्ष मे साथ दिया है। उन्होने कभी सामने आकर नेतृत्व नहीं किया। व्यापारी पूंजीपति तो हमेशा राज्य की मुठी मे रहता है। वह क्या संघर्ष कर पायेगा? रामदेव जी इतिहास बदलना चाहते थे। वे चौबे से छव्वे बनने के लिये राजनीति मे कूदें किन्तु दुबे बनकर भी बच जायंगे ऐसा नही लगता। यहॉ तक कि रामदेव जी के कन्धे पर सवार होकर भाजपा भी सत्ता की कल्पना करने लग गई थी । अब भी उसे लगता है कि कुल मिलाकर भाजपा को कुछ लाभ हुआ है। मेरे विचार मे रामदेव जी का तो जो कुछ होना था हुआ ही भाजपा को भी इस रामदेव प्रकरण से बहुत नुकसान उठाना पडेगा। क्योकि रामदेव जी भाजपा के कन्धे पर सवार नही थे । इसके उलट भाजपा ही रामदेव जी के कन्धे पर सवार थी ।

मैने पांच वर्ष पूर्व जब पहला लेख लिखा था तो मेरे कई साथी नाराज हुए थे । बाद मे भी कई साथियों की टिप्पणियॉ आती रही। मै अपने निष्कर्ष पर अडिग रहा। मै कभी बाबा का आलोचक भी नही रहा, विरोध का तो प्रश्न ही नहीं था। किन्तु मुझे बाबा रामदेव के अंदर कभी समाज शास्त्र का न तो ज्ञान दिखा न अनुभव । ऐसा सीधा साधा व्यक्ति यदि समाज विज्ञान से भी आगे बढकर राजनीति की कुटिल सीढियॉ चढने लगे तो भूल सीढी चढने वाले की मानी जायगी। चरित्रवान व्यक्ति को बहुत योजना पूर्वक ही वैश्यालय की चहार दीवारी मे घुसने की कोशिश करनी चाहिये। रामदेव जी व्यापार तक तो ठीक थे किन्तु आगे जाकर उन्होने भूल की। सन पंचान्नवे मे मैने जब व्यवस्था परिवर्तन की आवाज लगाई तो सत्ता प्रतिष्ठान ने मेरे उपर भरपूर आक्रमण किया था। राजनैतिक गलियारों मे मुझे एक आर्थिक सम्पन्न व्यापारी माना जाता था। यदि वास्तव मे मै आर्थिक रूप से सम्पन्न व्यापारी रहा होता तो या तो मै जल्दी ही समझौता कर लेता अन्यथा मेरा भी वही हाल होता जो रामदेव जी का हुआ। सरकार मेरा कुछ नही बिगाड सकी और मै अपने मार्ग पर लगातार बढता रहा। आज भी मै एकान्त मे बैठकर राजनीति शास्त्र और समाज शास्त्र पर गंभीर चिन्तन करता हूँ। मुझे आत्म संतोष है कि आज मेरे विचार संपूर्ण भारत मे गंभीरता से सुने जाते है। यदि मै भी धन संग्रह मे लग जाउॅ तो चिन्तन विकृत होना स्वाभाविक है और यदि धन सग्रह के साथ साथ सत्ता मोह मे भी लिपटने लगूँ तो बस भगवान ही मालिक है।

मै पूर्व मे भी कई बार स्पष्ट कर चुका हूँ और पूनः स्पष्ट करूँ कि वर्तमान स्थितियों मे कोई भी समाधान नही दिखता जिस पर आंख बन्द कर के चला जा सके । व्यक्ति के रूप मे तो कोई है ही नही किन्तु विचारधारा के रूप मे भी नही है।निराश होकर चुप बैठना भी उचित नही।समाज के समक्ष समस्याएँ बढ़ नहीं रहीं बल्कि योजनापूर्वक बढाई जा रही है। और इन समस्याओं को बढाने मे संसदीय प्रणाली सबसे आगे है । हम न तो तत्काल टकराव की स्थिति मे है न ही निराश होकर चुप बैठ सकते है। समस्याएँ हैं और लगातार बढाई जा रही है यह निश्चित है । किसी भी बीमारी के तीन प्रकार के इलाज होते है (1) प्राकृतिक, दीर्घकालिक, स्थायी समाधान (2) आयुर्वेदिक, मध्यकालिक, आंशिक समाधान (3) एलोपैथिक, अल्पकालिक, तत्काल क्षणिक समाधान। ज्ञान क्रान्ति प्राकृतिक समाधान है । इसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी चिन्तन शक्ति का विस्तार करना होता है। हम सब पूरी ताकत से इस ज्ञान क्रान्ति अभियान मे लगे है और सफल है । (2) अन्ना जी की टीम का अभियान आयुर्वेदिक इलाज है। इन्होने वर्तमान संसदीय लोकतंत्र को लोक स्वराज्य की दिशा के उद्देश्य से चुनौती दी है। बाबा रामदेव ने अनावश्यक बीच मे कूदकर राजनेताओ का मनोबल बढा दिया अन्यथा सब कुछ बिल्कुल ठीक ठाक चल रहा था । अब भी समय है कि बाबा रामदेव अपनी अनावश्यक महत्वकांक्षाएँ छोडकर इस आंदोलन को बाहर से समर्थन देना शुरू कर दें। यदि रामदेव जी समाधान के इच्छुक हैं तो यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है । (3) राजनीति मे इमानदार और संदेहास्पद का चरित्र विभाजन करके इमानदार लोगो को प्रोत्साहन तथा संदेहास्पद लोगो की आलोचना का अभियान समस्या का एलोपैथिक समाधान है । इसमें हम दलगत राजनीति से उपर उठकर मनमोहन सिंह, नीतिश कुमार की टीम की प्रशंसा और लालू, मुलायम, मायावती की टीम की आलोचना करें। हमारे समक्ष तीनो विकल्प खुले है। जो व्यक्ति जैसी क्षमता रखता है और जिस प्रणाली पर उसे विश्वास हो उस दिशा मे वह सक्रिय हो सकता है। मै तो ज्ञान क्रान्ति अभियान की दिशा मे पूरी ताकत से लगा हूँ । साथ ही अन्ना जी के आंदोलन का सहयोगी हूँ तथा मनमाहेन की टीम का प्रशंसक हूँ ।

अन्त मे मेरा रामदेव जी से निवेदन हे कि वे भारत की वर्तमान संसदीय प्रणाली को लोक स्वराज्य प्रणाली की ओर ले जाने के अन्ना हजारे आंदोलन को बिना शर्त बाहर से समर्थन करें। अन्यथा उनका वही हाल होगा कि आधी छोड एक पर धावे, एक मिले न आधी पावे।

कायरता की पटकथा पर माओवाद का मातम

–संजय द्विवेदी

भारतीय राज्य की निर्ममता और बहादुरी के किस्से हमे दिल्ली के रामलीला मैदान मे देखने को मिले। यहॉ भारतीय राज्य अपने समूचे विद्रूप के साथ अहिंसक लोगो के दमन पर उतारू था । लेकिन देश का एक इलाका ऐसा भी है जहॉ इस बहादुर राज्य की कायरता की कथा लिखी जा रही है। यहॉ हमारे जवान रोज मारे जा रहे है और राज्य के हाथ बंधे हुए लगते हैं।

बात बस्तर की हो रही है, जहॉ गुरूवार की रात 9 जून 2011 को नक्सलियों ने 10 पुलिस वालो को मौत के घाट उतार दिया । ठीक कुछ दिन पहले 23 मई 2011 को वे एक एडीशनल एसपी समेत 11 पुलिसकर्मियो को छत्तीसगढ के गरियाबंद मे मौत के घाट उतार देते है। गोली मारने के बाद शवो को क्षत विक्षत कर देते है। बहुत

वीभत्स नजारा है। माओवाद की ऐसी सौगातें छत्तीसगढ मे आम हो गई है। बाबा रामदेव के पीछे पडे हमारे गृहमंत्री पी0 चिदंबरम और केंद्रीय सरकार के बहादुर मंत्री क्या नक्सलवादियों की तरफ भी रूख करेंगें?

भारतीय राज्य के द्वारा पैदा किए गए भ्रम का सबसे ज्यादा फायदा नक्सली उठा रहे है। उनका खूनी खेल नित नये क्षेत्रो मे विस्तार कर रहा है। निरंतर अपना क्षेत्र विस्तार कर रहे नक्सल संगठन हमारे राज्य को निरंतर चुनौती देते हुए आगे बढ़ रहे है। उनका निशाना दिल्ली है। 2050 मे भारतीय राज्य सत्ता पर कब्जे का उनका दुस्वप्न बहुत प्रकट है किन्तु जाने क्यो हमारी सरकारें इस अधोषित युद्ध के समक्ष अत्यंत विनीत नजर आती है। एक बडी सोची समक्षी साजिश के तहत नक्सलवाद को एक विचार के साथ जोड कर विचारधारा बताया जा रहा है। क्या आतंक का भी कोई वाद हो सकता है? क्या रक्त बहाने की भी कोई विचारधारा हो सकती है? राक्षसी आतंक का दमन और उसका समूल नाश ही इसका उत्तर है । किन्तु हमारी सरकारो मे बैठे कुछ राजनेता, नौकरशाह, मीडिया कर्मी, बुद्धिजीवी और जनसंगठनो के लोग नक्सलवाद को लेकर समाज को भ्रमित करने मे सफल हो रहे है। गोली का जबाब, गोली से देना गलत है– ऐसा कहना सरल है किन्तु ऐसी स्थितियों मे रहते हुए सहज जीवन जीना भी कठिन है। एक विचार ने जब आपके गणतंत्र के खिलाफ युद्ध छेड रखा है तो क्या आप उसे शान्ति प्रवचन ही देते रहेंगे । आप उनसे संवाद की अपीलें करते रहेंगें और बातचीत के लिये तैयार हो जायेगे। जबकि सामने वाला पक्ष इस भ्रम का फायदा उठाकर निरंतर नई शक्ति अर्जित कर रहा है।

देश को तोडने और आम आदमी की लडाई लडने के नाम पर हमारे जनतंत्र को बदनाम करने मे लगी ये ताकतें व्यवस्था से आम आदमी का भरोसा उठाना चाहती है। अफसोस, व्यवस्था के नियम इस सत्य को नही समझ रहे है। वे तो बस शान्ति प्रवचन करते हुए लोकतंत्र की कायरता के प्रतीक बन गये है। अपने भूगोल और अपने नागरिको की रक्षा का धर्म हमे लोकतंत्र ही सिखाता है। निरंतर मारे जा रहे आदिवासी समाज के लोग और हमारे पुलिस और सुरक्षा बलों के जवान आखिर हमारी पीडा का कारण क्यो नही है? जब भारतीय राज्य को अपनी कायरता की ही पटकथा लिखनी है तो क्या कारण है कि अपने जवानो के जंगलो मे ढकेल रखा है? इन इलाको से सुरक्षा बलो को वापस बुलाइये क्योकि वे ही नक्सलियो के सबसे बडे शत्रु है। नक्सलियो के निशाने पर आम आदमी, पुलिस व सुरक्षाबलो के जवान है। शेष सरकारी अमले से उनका कोई संघर्ष नही दिखता । वे सबसे लेवी वसूलते हुए जंगल मे मंगल कर रहे है और एक न पूरा होने वाला स्वपन देख रहे है । किन्तु जिस राज्य पर उनके स्वप्न भंग की जिम्मेदारी है, वह क्या कर रहा है।

विचारधारा के आधार पर बटे देश मे यह कितना दुर्भाग्यपूर्ण है कि आतंकवाद और नक्सलवाद जैसे सवालो पर भी हम एक आम सहमति नही बना पा रहे है। प्लीज, अब इसे लोकतंत्र का सौदर्य या विशेषता न कहिये। क्योकि जहॉ हमारे लोग मारे जा रहे हो वहॉ भी हम असहमति के सौदर्य पर मुग्ध है तो यह चिंतन बेहद अमानवीय है। हिंसा का कोई भी रूप, वह वैचारिक रूप से कही से भी प्रेरणा पाता हो, आदर योग्य नही हो सकता। यह हिंसा के खिलाफ हमारी सामूहिक सोच बनाने का समय है। आतंकवाद के विविध रूपो से जूझता भारत और अपने अपने आतंक को सैद्धान्तिक जामा व वैचारिक कवच पहनाने मे लगे बुद्धिजीवी इस देश के लिये सबसे बडा खतरा है।

आदिवासी समाज को निकट से जानने वाले जानते है कि यह दुनिया का सबसे निर्दोष समाज है। ऐसे समाज की पीडा को देखकर भी न जाने कैसे हम चुप रह जाते है। पर यह तय मानिये कि इस बेहद अहिंसक, प्राकृतिपूजक समाज के खिलाफ चल रहा नक्सलवाद अभियान एक मानवताविरोधी अभियान भी है। हमे किसी भी रूप मे इस सवाल पर किन्तु परन्तु जैसे शब्दों के माध्यम से बाजीगरी दिखाने का प्रयास नही करना चाहिये। भारत की भूमि के वास्तविक पुत्र आदिवासी ही है, कोई विदेशी विचार उन्हे मिटाने मे सफल नही हो सकता। उनके शान्त जीवन मे बंदूको का खलल, बारूदो की गंध हटाने का यही सही समय है । केन्द्र और राज्य सरकारो मे समन्वय और स्पष्ट नीति के अभाव ने इस संकट को और गहरा किया है। राजनीति की अपनी चाल और प्रकृति होती है। किन्तु बस्तर से आ रहे संदेश यह कह रहे है कि भारतीय लोकतंत्र यहॉ एक कठिन लडाई लड रहा है उसका सबसे बडा सवाल यह है कि क्या हमारी सरकारो और राजनीति की प्राथमिकता मे आदिवासी कहीं आते है। क्योकि आदिवासियों की अस्मिता के इस ज्वलंत प्रश्न पर आदिवासियों को छोडकर सब लोग बात कर रहे है, इस कोलाहल मे आदिवासियों के मौन को पढने का साहस क्या हमारे पास है?

समीक्षा– मैं आपके लेख की मूल भावना से पूरी तरह सहमत हूँ । किन्तु बाबा रामदेव का चार जून का रामलीला मैदान का अनशन और बस्तर के आतंकवाद की तुलना नही हो सकती। यह अनशन एक अस्पष्ट मुद्दे पर किया गया आंदोलन था जबकि नक्सलवाद एक सुनियोजित हिंसक सत्ता संघर्ष। मै सहमत हूँ कि रामलीला मैदान के अनशन की अपेक्षा बस्तर की समस्या कई गुना अधिक चिन्ताजनक है किन्तु यदि किसी कारण वश बस्तर मे कायरता दिखानी पड रही है तो दिल्ली को भी अव्यवस्था मे झोंक दिया जाय यह ठीक नहीं।बाबा रामदेव जिस काले धन के लिये निर्णायक संघर्ष पर उतारू थे उन्ही बाबा रामदेव ने बस्तर मुक्ति को मुद्दा बनाकर अनशन क्यों नहीं किया। क्या बस्तर भारत का अंग नहीं? क्या बस्तर की समस्या काले धन की अपेक्षा कई गुना ज्यादा गंभीर नहीं?

बस्तर के आतंक की पटकथा मे अब तक दो पात्रो के बीच के सत्ता संघर्ष की गंध आ रही है जिसमें एक ओर है मनमोहन सिंह सरकार और दूसरी तरफ है मनमोहन सिंह को येन केन प्रकारेण असफल अयोग्य सिद्ध करके राहुल गांधी को बिठाने की जल्दबाजी। मनमोहन सिंह का हर कदम सुनियोजित तथा लोक तांत्रिक है तो राहुल की टीम का बचकाना तथा घातक । मेरे पास कोई स्पष्ट जानकारी तो है ही नही किन्तु जिस तरह राष्ट्रीय सलाहकार परिषद को प्रोत्साहित किया जा रहा है अथवा दिग्विजय सिंह को छुट्टा सांड़ के समान कहीं भी मुँह मारने की छूट दी गई है वह संदेह तो पैदा करती ही है कि मनमोहन सिंह जी को बदनाम करने की सुनियोजित चालें चली जा रही है । इन चालों मे सोनिया जी शामिल हो भी सकती है और शायद न भी हों। राहुल गांधी तो अभी नौसिखिया हैं । हो सकता है कि वह सत्ता के लोभ मे न पडकर वास्तव मे मनमोहन सिंह को गलत मानने लगा हो। बात चाहे जो हो किन्तु खतरनाक है। अभी तेा बस्तर क मामला कठिन होते हुए भी हाथ से बाहर नही गया है किन्तु उस दिशा मे जा जरूर रहा है । भारतीय जनता पार्टी तो अब केन्द्र मे अस्तित्व ही खो रही है। इसलिये अब तो आप जैसे जागरूक लोगों को ही आगे आना चाहिये। साथ देने मे तो हम सब है ही यह मामला किसी भी रूप मे आदिवासी गैर आदिवासी का नही है। फिर भी यदि मामले को अधिक हाईलाइट करने के लिये आदिवासी शव्द शामिल किया गया है तो कोई गलत नहीं । यह सच है कि बस्तर के युद्ध क्षेत्र बनने से वहॉ जिन लोगो को सबसे ज्यादा परेशानी होगी वे गरीब भी है ग्रामीण भी और सम्वैधानिक भाषा मे आदिवासी भी।अतः इस मामले को हर तरह से सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिये। मेरा तो मत है कि भविष्य मे नक्सलवादियो के द्वारा की गई हत्याओ के शिकार मृतको के शव राहुल गांधी की टीम अथवा विशेषकर दिग्विजय सिंह के पास भेज दिये जाने चाहिये। शायद इनकी आत्मा जगे और ये राजनीति से उपर उठकर राष्ट्र और समाज के विषय मे भी सोचना शुरू करें।

(1) श्री चिन्मय व्यास, मालदेवता , देहरादून, उत्तरांचल

सुझाव अंक 221 मे आपने अपनी भूमिका मे बताया कि अन्ना हजारे को समर्थन है मगर रामदेव को नही क्योकि राजनीतिक दृष्टिकोण मे अंतर है । रामदेव या अन्य कोई भी विचारधारा वाले यदि देश या मानवता के समग्र व्यापक हित के लिये कोई अहम मुद्दे के लिये शान्ति पूर्ण तरीके से अहिंसक तरीके से आंदोलन करते है तो उसे समर्थन देना चाहिये। भ्रष्टाचार कालाधन भाई भतीजावाद, अफसर शाही, गरीबी, बेरोजगारी, प्रदूषण वृद्धि , वन कटाई या अन्य कोई मुद्दा जो आज की ज्वलंत समस्या है और सार्वजतिक हित का है तो हमे सैद्धान्तिक मतभेद को सुरक्षित रखते हुए भी उसे समर्थन देना चाहिये ताकि बुराई को दूर करने मे देश की जागरूक शक्ति समग्र रूप से उस काम मे लगे। सिद्धान्त के नाम पर हम मूक रहें यह ठीक नहीं। सब अच्छी ताकतो को अच्छे काम के लिये एक जुट हो जाना चाहिये। छोटे छोटे दायरो मे अच्छी शक्तियॉ बटी न रहे। बनवारी लाल जी अण्णा हजारे , खैरनारजी , किरण वेदी, या अन्य संस्थाऍ व लोग सबको अच्छे काम के लिये व्यापक समर्थन देना चाहिये।

उत्तर– मै कभी भी रामदेव जी का न आलोचक रहा न विरोधी । मै उनका प्रशंसक रहा हूँ । किन्तु मै इस बात के पक्ष मे नही कि यह आंदोलन टुकडो के बटे । मेरी इच्छा है कि सब लोग मतभेद भूलकर एक जगह इकठ्ठे हो । आप जानते है कि इस विषय पर हमलोगों की टीम ने सबसे अधिक प्रयास किया है। किन्तु हम अपने प्रयासो को आंदोलन मे नही बदल सके । अब यदि अन्ना जी की टीम उस दिशा मे आगे बढती है तो हमे खुश होना चाहिये न कि अन्ना जी के प्रयत्नो मे अनावश्यक छेद खोजने चाहिये। आपके पत्र के बाद स्थितियॉ बदल चुकी है इसलिये आपके अगले पत्र का इंतजार करूगां । रामदेव जी के आंदोलन मे कहीं भी व्यवस्था परिवर्तन नही है । हमारे देश की विधायिका ने मंत्रिमंडल के माध्यम से कार्यपालिका पर अपना अधिकार जमा रखा है और संसद के माध्यम से संविधान संशोधन पर भी। यदि कार्यपालिका तथा संविधान संशोधन दोनो पर विधायिका का अंकुश हो जाय तब लोकतंत्र को आदर्श कैसे कहें? इसलिये हमारी लडाई विधायिका के आदेशों के खिलाफ न होकर अधिकारो के खिलाफ होना चाहिये। सरकार के गलत आदेशो के खिलाफ लडाई लडना किसी भी रूप मे व्यवस्था परिवर्तन नहीं है जब तक उस आदेश को बदलने का अन्तिम अधिकार विधायिका के पास ही रहता है। हम तो यह चाहते है कि विधायिका या सरकार के अधिकारो की समीक्षा हो । यह घोषित हो कि राज्य अथवा संसद के अधिकारो की सीमाऍ क्या हो? यदि

आवश्यकता पडे तो संविधान संशोंधन के विधायिका के अधिकार भी संशोधित हो। रामदेव जी के आंदोलन मे सरकार के गलत आदेशों के विरूद्ध ही संघर्ष की बात सीमित है, जो हमारा उद्देश्य नही । अन्ना जी के आंदोलन की दिशा राज्य के अधिकारों की समीक्षा की ओर मुड़ी है । इसलिये हम अन्ना जी और रामदेव जी मे फर्क कर रहे है।

(2) श्री राजेन्द्र भारतीय, महालक्ष्मी नगर , इन्दौर म0प्र0

ज्ञान तत्व अंक 220, प्राप्त हुआ। इस अंक के पृष्ठ 37 पर श्री राम जी लाल अरोडा अजमेर राजस्थान के एक प्रश्न के उत्तर के तहत बिन्दु क्र 0 :5 के अंतर्गत आपकी ये चार पक्तिया अंकित है'' धर्म संकट मे है धर्म की रक्षा करना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हिन्दू मुसलमान इसाई सिक्ख सभी धर्म प्रेमियो को एक जुट होकर अधर्म के विरूद्ध संघर्ष शुरू कर देना चाहिये । इन पक्तियों पर मन मे जिज्ञासा स्वरूप कुछ प्रश्न उभर आये है जो इस प्रकार है। आपकी दृष्टि मे धर्म क्या है उसका रूवरूप कैसा हो? कौन सा कैसा धर्म संकट मे है? हिन्दु मुस्लिम इसाई सिक्ख धर्मावलंबियों को आपने धर्म प्रेमियों के रूप मे आहवान कर किस धर्म के लिये एक जुट होकर संघर्ष करने हेतु कहा है ? क्या वह उपयुक्त धर्म मतवालंबियों के धर्म से भिन्नता रखता है? क्या ये सब भिन्न धर्मानुयायी एक जुट हो सकेंगे।? अगर हॉ तो उनके एकजुट होने की ज्ञान प्रेम भाव विचार कर्म मय कौन सा सिद्धान्त या कौन सी कैसी योजना आधार भूमि हो सकेगी? इसका नाम क्या होगा?

आपने आगे लिखा है कि आर्य समाज ने मुझे बचपन मे ही इसाई होने से बचा लिया है । इस पर जिज्ञासा है कि इसाई धर्म की ऐसी कौन सी बाते थी जिन से प्रभावित और आकर्षित होकर आप बचपन मे ही इसाई बनना चाहते थे ?आर्य समाज की किन बातो ने आपको इसाई धर्म के प्रभाव और आकर्षण से मुक्त कराया?

,उत्तर– धार्मिक आधार पर व्यक्ति तीन प्रकार के होते हैं। (1) जो ऐसे काम करते हे जो उन्हे समाज के प्रति करने चाहिये (2) जो ऐसे काम नही करते जो समाज के प्रति करने चाहिये। (3) जो ऐसे काम करते है जो उन्हे समाज के प्रति नही करने चाहिये। पहले प्रकार को धार्मिक, दूसरे को अधार्मिक तीसरे को धर्मविरोधी कहा जाता है। धार्मिक और अधार्मिक लोग हिन्दू मुसलमान इसाई विचारधाराओं मे बटे हो सकते है किन्तु धर्म विरोधी लोग हिन्दु, मुसलमान, इसाई मे शामिल नही हो सकते क्योकि वे तो ऐसे कार्यो मे संलग्न है जो निषिद्ध है।

मोटे तौर पर सामान्य परिस्थितियों मे पांच प्रकार के कार्य धर्म विरोधी माने जा सकते है (1) चोरी, डकैती, लूट (2) बलात्कार (3) मिलावट, कमतौल (4) धोखा, जालसाजी (5) हिंसा और आतंक। छठवां कोई भी आचरण धर्म विरोधी नही होता । ये पांच काम भी देश काल परिस्थिति अनुसार अर्थ बदलते रहते है ।

धर्म के आधार पर संस्थाएँ तो बन सकती है किन्तु संगठन नही क्योकि संगठन मे अधिकार और कर्तव्य दोना जुडा रहता है और संस्था मे अधिकार भाव होता ही नही। हिन्दू मुसलमान इसाई सिख यदि संगठन के रूप मे स्थापित है तो निश्चित रूप से वे धार्मिक तो नही हो सकते भले ही अधार्मिक हो या धर्म विरोधी। इस्लाम मे मुठी भर सुफी लोगो को छोडकर बहुत बडी संख्या धर्म को संगठन मानकर चलने वालो की है । इसाइयो मे संगठन मानने वाले की संख्या कम है और हिन्दुओ मे नगण्य है।

वर्तमान समय मे धर्म विरोधी लोग लगातार ताकतवर होते जा रहे है । यहॉ तक कि अब तो हिन्दु मुसलमान इसााई के नाम पर संगठन भी बनते जा रहे है तथा इन संगठनो मे धर्म विरोधी आचरण करने वाले लोग धडल्ले से शामिल हो रहे है। धर्म की पहचान आचरण से हटकर चोटी दाढी भाषा वस्त्र आदि तक सिमटती जा रही है इसलिये मैने लिखा कि सभी धर्म प्रेमियो को एक जुट होना चाहिये । मै जैसा सोच रहा हूँ वैसा होना अभी संभव नही दिखता किन्तु हमे प्रयत्न जारी रखना चाहिये । स्वामी सत्य भक्त जी ने इस दिशा मे काफी कुछ प्रयत्न किये। यदि बीज बचा रहा तो भविष्य मे कोई खाद पानी देकर बीज को पेड की दिशा मे बढा सकता है। बहुत बचपन मे छुआछूत का विरोध करने के कारण उस समय के ब्राम्हणो से मेरा टकराव हो गया था। स्थानीय चर्च वालों के अच्छे व्यवहार ने मुझे आकर्षित किया और मै इसाइयत की दिशा मे कदम बढाया । मै इसाइयत के गुण दोष की समीक्षा करके उधर नही जा रहा था बल्कि वह एक परिस्थिति जन्य घटना थी । इसी तरह आर्य समाज के गुण दोषो की व्यापक समीक्षा भी न करके परिस्थिति जन्य घटना के आधार पा मै आर्य समाज से जुडा । बाद मे मुझे आर्य समाज की एक बात ने प्रभावित किया कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोडने को सदा तैयार रहना चाहिये। वर्तमान समय मे आर्य समाज का दसवां नियम मुझे बहुत प्रभावित करता है कि व्यक्ति को व्यक्तिगत मामलो मे निर्णय की अधिकतम स्वतंत्रता होनी चाहिये । तथा सामूहिक मामलो मे सब मिलकर ही निर्णय करें । आर्य समाज का यह नियम ही लोक स्वराज्य का महत्वपूर्ण कदम है।

(3) श्री ओमपल सिंह जी मेरठ

ज्ञान तत्व दो सौ चौबीस मे कुछ गंभीर चर्चाऍ की गई है । कुछ प्रश्न भी उठते है आप इन प्रश्नो को आधार बनाकर विस्तृत समीक्षा करने की कृपा करे–

(1) समाज व्यसस्था और समाजवाद मे क्या अंतर है

(2) धर्म और पूजा पद्धति का अंतर स्पष्ट करें

(3) व्यक्ति के मूल अधिकारों का निर्धारण समाज का अधिकार है या राज्य का । संविधान की इसमे क्या भूमिका है?

(4) किसी व्यक्ति के बालिग होने या न होने का निर्णय कौन करेगा।

उत्तर– व्यक्ति, परिवार और समाज के आपसी सम्बन्धो के कर्तव्य, दायित्व और अधिकारो का समन्वय समाज व्यवस्था है । समाज व्यवस्था अनुशासन से चलती है तथा शासन मुक्त होती है । जब व्यक्ति, परिवार और समाज मे से कोइ इकाई किसी अन्य इकाई की सहमति के बिना उसके अधिकारों की सीमाओ मे हस्तक्षेप करती है तब राज्य की भूमिका शुरू होती है अन्यथा नहीं। भारत मे ऐसी ही व्यवस्था थी किन्तु कई सौ वर्षो की गुलामी ने समाज व्यवस्था को कमजोर करके राज्य द्वारा स्वयं को समाज घोषित करने की मानसिकता बनाई जो अब तक जारी है।

समाजवाद शव्द की उत्पत्ति भारत से न होकर यूरोप से है। समाज वाद कोई विचारधारा रही अथवा मजबूरी यह निश्चय पूर्वक नही कहा जा सकता। ऐसा लगता है पूंजीवाद के विरूद्ध साम्यवाद की निरंतर बढती सफलताओं से चिन्तित होकर पूंजीवादी देशो ने समाजवाद शुरू किया । साम्यवाद तथा समाजवाद राजनैतिक शक्ति के केन्द्रीकरण तथा आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण के पोषक है । किन्तु साम्यवाद तथा समाजवाद मे खास फर्क यह है कि साम्यवाद बलप्रयोग को उचित मानता है जबकि समाजवाद लोकतांत्रिक तरीके पर विश्वास करता है । मुझे ऐसा लगता है कि साम्यवाद की बाढ़ को रोकने के उद्देश्य से समाजवाद लाने के प्रयास शुरू हुए होगें। पूजींवाद और लोकतंत्र भयभीत हो गये होगे कि यदि समाज वाद नही आया तो साम्यवाद पूरी दुनियॉ को निगल जायगा। इसलिये ही समाज शव्द को जोडकर यह नया शव्द बनाया गया। समाजवाद समाज व्यवस्था को कमजोर करके राज्य व्यवस्था को मजबूत करता है । समाजवाद साम्यवाद से बचने का तो माध्यम है किन्तु राज्य को समाज के आंतरिक मामलो मे हस्तक्षेप का मार्ग खोलता है । वर्तमान समय मे भारत मे साम्यवाद अप्रासंगिक हो गया है। अब तो भारत को खतरा है पूजींवाद से । पूंजीवाद की अपेक्षा समाजवाद अधिक घातक है। इसलिये पूंजीवाद के स्थान पर समाजीकरण प्रणाली पर सोचा जाना उचित होगा।

धर्म और पूजा पद्धति बिल्कुल भिन्न विषय है। किसी अन्य के हित मे किये गये निःस्वार्थ कार्य को धर्म कहते है । पूजा पद्धति नितान्त व्यक्तिगत हित का मामला है। जबकि धर्म नितान्त, सामाजिक। पूजा पद्धति मे व्यक्ति स्वयं को धर्म की ओर प्रेरित करने का प्रयत्न करता है। भारत मे चूँकि धर्म पूजा पद्धति से न जुडकर सीधा आचरण से जुडा था इसलिये नास्तिक भी धर्मात्मा हो सकता था । अन्य संगठन प्रधान धर्मो मे यह छूट नही । वर्तमान समय मे हिन्दु धर्मावलंबी बहुमत भी पूजा पद्धति को ही धर्म मानने लगा है। हिन्दुआ का एक छोटा समूह तो संगठन को भी धर्म के लिये आवश्यक गुण बताने लगा है। हिन्दु बहुमत का कर्तव्य था कि वह धर्म की विकृत परिभाषा वालो को धर्म की वास्तविक परिभाषा का ज्ञान कराता जिसके विपरीत वह स्वयं ही उस विकृत परिभाषा का पैरोकार बनने लगा यह दुखद है।

व्यक्ति के मूल अधिकारो का निर्धारण न समाज कर सकता है न राज्य । व्यक्ति के मूल अधिकार प्रकृति प्रदत्त है दीर्घकालिक है, अपरिवर्तनीय है। यह गलत बात प्रचारित हुई है कि संविधान व्यक्ति को मूल अधिकार देता है। संविधान को तो स्वयं को अधिकार समाज ने दिये है। कोई भी अधिकार संविधान का अपना नहीं। जब उसका अपना स्वयं का कुछ नही तो वह दूसरो को क्या देगा? संविधान व्यक्ति के मूल अधिकारो की सुरक्षा की गारंटी मात्र देता है। यह सुरक्षा की गारंटी उसका दायित्व है स्वैच्छिक कर्तव्य मात्र नही । पश्चिम के विद्वान मूल अधिकार की परिभाषा ठीक ठीक न समझने के कारण उसे अस्पष्ट बना दिये । साम्यवाद तथा इस्लाम तो मूल अधिकार मानता ही नही । यह सिर्फ भारत की अवधारणा है। दुर्भाग्य से हमारे संविधान निर्माताओं ने भी पश्चिम की नकल करके मूल अधिकार की परिभाषा को विकृत कर दिया।

मूल अधिकार व्यक्ति के व्यक्तिगत होते है । समाज सरकार या संविधान व्यक्ति के इन व्यक्तिगत अधिकारो मे बिना उसकी सहमति के किसी भी स्थिति मे तब तक कोइ कटौती नही कर सकता जब तक उस व्यक्ति ने किसी अन्य व्यक्ति के मूल अधिकारो पर आक्रमण न किया हो । यदि किसी व्यक्ति ने परिवार या समाज के नियमो को तोडा हो तब भी उस व्यक्ति के पारिवारिक या सामाजिक अधिकारों मे ही कटौती हो सकती है, मूल अधिकारो मे नही। किसी व्यक्ति ने अपनी बेटी को पत्नी बना लिया जो एक

समाज विरोधी कार्य है । हम उस व्यक्ति को समाज बहिष्कृत तो कर सकते है किन्तु पीट नही सकते क्यो कि पीटना उस व्यक्ति के मूल अधिकारों का उल्लंघन है। यदि वह व्यक्ति बलात्कार करे तब उसे राज्य के माध्यम से दण्डित कराया जा सकता है क्योकि उसने किसी अन्य के मौलिक अधिकारों पर आक्रमण किया है। हमारे संविधान निर्माताओं ने ना समझी मे पश्चिम की नकल करके मूल अधिकार की अवधारणा बदल दी।

किसी व्यक्ति के बालिग होने का निर्णय पारिवारिक मामलो मे परिवार करेगा, सामाजिक मामलो मे समाज और संवैधानिक मामलों मे कानून । किसी व्यक्ति को किस उम्र मे वोट का अधिकार दिया जाय यह कानून तय करेगा। किसी बालक को किस उम्र मे विवाह की छूट दी जाय यह परिवार और समाज तय करेगें, सरकार नही। किसी व्यक्ति के बालिग होने ने होने का निर्णय कुछ विषयों मे तो सामान्य हो सकते है किन्तु कुछ विषयो मे उस व्यक्ति की क्षमता योग्यता के आधार पर तय करना होगा । हर मामले मे सरकार को दखल नही देना चाहिये।

(4) ए0 पी0 द्विवेदी, रीवा मध्य प्रदेश

(1) बाबा रामदेव जी के आंदोलन के आधार पर भ्रष्टाचार और काले धन को वापस लाकर अपने देश का पैसा यदि जिसने जमा किया है वह अपना सही तरीके से व्यौरा देता है तो वह अपना धन वापस ले ले। यदि कोइ यह बताने को तैयार नही है कि यह पैसा हमारा है और कहॉ से मिला तो उस पैसो को देश के राष्ट्रीय खजाने मे जमा करने को कह रहे है तो कौन सा गलत कह रहे है। सरकार के लोग यदि यह गलत मानते है तो देश की एक सौ बीस करोड के लगभग जनता को अपना सही जबाब दे।

(2) मेरी समझ से बाबा रामदेव जी के द्वारा किया जा रहा भ्रष्टाचार का काला धन वापस लाने का मामला हो या अन्ना हजारे का लोकपाल बिल या भ्रष्टाचार मिटाने का मुद्दा ही। दोनो मुद्दो पर तंत्र व सरकार कोई ठोस कार्यवाही करना ही नही चाहती तथा विपक्ष मे भी वैठे सदन के लोग कार्यवाही कराना नही चाहते क्योकि हमारी समझ से यदि लोकतंत्र मे अपराध करना गलत है तो उससे भी बडा अपराध, अपराधी, को सहायता करना, और अपराध सहना भी है।

(3) मै इस समय की सामाजिक वा लोकतांत्रिक व्यवस्था से पूर्ण रूपेण सहमत नही हूँ । क्योकि वर्तमान समय मे हमारी समझ से भावनात्मक वा वर्चस्व की लडाई लड़ी जा रही है। यदि वर्तमान समय मे सुविचार, भावनात्मक और वौद्धिक तीनो का विचार मंथन कर देश हित वा समाज हित मे कार्य किया जाय तो वर्तमान समय मे चल रहे भ्रष्टाचार वा वर्चस्व रूपी अहं को समाप्त किया जा सकता है। क्योकि वर्तमान समय मे भ्रष्टाचार वा वर्चस्व रूपी अहं वा धन रूपी ताकत और तंत्र रूपी पद ये तीनो समाज वा देश को दल दल रूपी कीचड मे ढकेल रहे है। क्योकि ये तीनो जो दुगुर्ण है मनुष्य के जीवन मे समाहित हो चुका है इन तीनो दुर्गुर्णो को मनुष्य रूपी जीवन से त्यागना होगा तभी देश मे सामन्जस्य बन सकता है। जिस दिन यह विचार समस्त मानव जीवन मे राजनैतिक सामाजिक संगठन तथा धार्मिक लोगो के जीवन मे एक राष्ट्रभाव उत्पन्न हो जायगा। तो हमारे देश के महान पुरूषो का सपना साकार हो जायगा तथा एक अच्छे देश के रूप मे उभर कर विश्व शक्ति के रूप मे हम देख सकते है।

(4) हमारे विचार से 4/6/11 को वावा रामदेव जी के द्वारा किये जा रहे भ्रष्टाचार वा काले धन को वापस लाने का आंदोलन मे सरकार और बाबा के बीच जो घटना हुई उसमे हमारी समझ से सरकार मे बैठे सरकारी तंत्र (1) पक्ष और विपक्ष (2) समस्त सामाजिक संगठन (3) धर्म की परिकल्पना लिये समाज सुधार के विचार रखने वाले धार्मिक संगठन 4/6/11 की हुई घटना के कही न कही तीनो दोशी है। कोई कम हो सकता है तो कोई ज्यादा। क्योकि 4/6/11 की घटना मे बाबा रामदेव जी और सरकार के बीच घटित घटना मे बीच के लोग चाहे राजनैतक विपक्ष या अन्य सामाजिक संगठन या धार्मिक संगठन हो वह मूक दर्शक बन कर बैठा देख और सोच रहा था कि बाबा रामदेव जी या सरकार के बीच हो रहे सामाजिक सुधार या भ्रष्टाचार खत्म या काले धन वापस के क्या परिणाम आ सकते है क्योकि बाबा रामदेव जी के इस आंदोलन मे सुअस्पटता नही दिखाई दे रही थी क्योकि यह आंदोलन एक भावनात्मक रूप से तैयार आंदोलन था। यदि इसी आंदोलन को भावना और विचार मंथन करके किया जाता तो परिणाम पहले ही परिलक्षित हो जाता क्योकि इसका मूल कारण बाबा जी के क्रिया कलापो से ही पता नही चल रहा है। यदि बाबा रामदेव जी किसी के दबाव मे नही थे या मरने से नही डरते , तो बाबा रामदेव जी भारत की जनता या अपने कार्यकर्ताओं से अपने द्वारा किया या कराये गये कृत्यों को क्यो छुपाया? बाबा जी के पास सरकार द्वारा किये गये कृत्यो को उजागर करने का काफी समय था । इसमे कुछ ना कुछ बाबा रामदेव की कमजोरी जरूर रही होगी। जिसके केवल सरकार के कुछ लोगो वा बाबा रामदेव जी ही जानते है जिसके कारण यह घटना हुई । यदि बाबा जी जंतर मंतर मे अपने एक लाख कार्यकताओं के बीच स्टेज पर वा देश मे कई सामाजिक संगठन वा धार्मिक संगठन या समाज के लोग बाबा के पीछे खडे थे तो बाबा रामदेव जी को स्टेज से इसे तरह छलांग लगाकर कूद कर भागने की क्या जरूरत पडी।बाबा रामदेव जी उस समय स्टेज पर बैठे रहते और अपने कार्यकर्ताओ या देश के लोगो को मीडिया के सामने उद्वोधन करते, ऐ देश के लोगो मेरे और आपके मौलिक अधिकारो का हनन कर ले जा रहे है तो अब आप लोगो को लगता है कि गलत है तो हमारे साथ आप स्वयं आइये। छलांग लगाकर भाग दिये और इसके बाद कही नही दिखाई दिये और सीधे हरीद्वार पहुॅचे। वहॉ पर मिडीया द्वारा सूचना प्रकाशित हुई जिसके परिणाम स्वरूप कार्यकर्ता भडके और सीधे सरकार के तंत्र से भिड गई जिसका परिणाम यह हुआ कि जो मोहे मारे ते मै मारे और वेचारी भोली भाली जनता पिट गई और बाबा रामदेव जी हरीद्वार और सरकार अपनी जगह और दोना के तरफ से बेचारे कार्यकर्ता वा तंत्र की सेना कसरत वा हो हल्ला का रही है।

(5) सरकार यह बताये कि बाबा के द्वारा लिखाई गई चिठ्ठी का खुलासा पहले क्यो नही किया ऐसी कौन सी मजबूरी सरकार के पास और बाबा रामदेव थी कि श्री बाल कृष्ण . के. द्वारा लिखवाई गई चिठ्ठी का खुलासा समय रहते नही कर सके? इसमे दोनो की कमजोरी प्रकाशित हो रही है ।

(6) यदि ऐसा नही है तो हमारी समझ से इस आंदालन मे हुए कृत्य को दोनो जन मीडीया के समक्ष एक स्टेज पर सामाजिक संगठनो या धार्मिक संगठनो तथा तंत्र मे बैठे पक्ष विपक्ष वा समस्त जनता के सामने लाइव टेलिकास्ट प्रकाशित करते हुए अपना स्पष्ट विचार व कार्य का प्रकाशन वा उदवोधन करे। जिससे सरकार और बाबा रामदेव के बीच की जो कमजोरी होगी वही समस्त देश वासियों के सामने परिलक्षित होने लगेगी। और इस भ्रष्टाचार को तंत्र और सरकार खत्म करना नही चाहती और बाबा जी पूर्ण तैयारी नही की।

(7) मेरी समझ से तो जो लोग इस भारत को एक सामाजिक मूलक वा समृद्ध भारत तथा देश से भ्रष्टाचार समाप्त होने की परिकल्पना सोचते है तो उन सभी सामाजिक संगठन या धार्मिक समाज वा राजनैतिक संगठन तथा मीडिया के लोगों को एक साथ बैठ कर भिन्न भिन्न विचारो से निकली हुई वाणी से भावनात्मक और विचारात्मक तथा ज्ञानात्मक इन तीनों के मंथन से जो सही उपयुक्त कार्य समाज हित (राष्ट्र) तथा देश हित मे निकल कर आये उस पर एक साथ सब मिल कर कार्य करे तभी परिणाम अच्छा आयेगा। नही तो ये भ्रष्टाचार युक्त तंत्र के लोग हम सब को एक एक कर कुचल देगें और एक छत्र राज्य करेंगे। और परिणाम यही हो जा हो रहा है।

कार्यालयीन प्रश्नो के उत्तर–

(1) प्रश्न– आपने ज्ञान तत्व दो सौ तेइस मे वेद व्यथित जी द्वारा परमाणु उर्जा के विरूद्ध आंदोलन मे सहभागी होने की आलोचना की है। अब पता चला है कि जर्मन सरकार ने भी सन दो हजार बाइस तक परमाणु उर्जा संयंत्र पूरी तरह बंद करने की घोषणा कर दी है। अब इस संबंध मे आपकी क्या राय है?

उत्तर– जर्मन सरकार ने दस वर्षो मे परमाणु उर्जा संयंत्र बंद करने की घोषणा की है यह सच तो है किन्तु यह भी सच है कि जर्मन सरकार ने परमाणु उर्जा को दस वर्षो मे सौर उर्जा मे बदलने की बात कही है न कि डीजल पेट्रोल कोयला मे। आप लोग परमाणु उर्जा का विरोध करने का ठेका लिये दिखते है तभी तो आधी बात प्रस्तुत करते है। पहली बात तो यह है कि जर्मनी और भारत की आर्थिक स्थिति अलग अलग है । भारत जर्मनी की नकल नही कर सकता। दूसरी बात यह है कि जर्मनी का बिजली उत्पादन परमाणु संयत्र से सौर उर्जा की ओर बदल रहा है जबकि भारत का परमाणु उर्जा से कोयला डीजल पेट्रोल उर्जा संयंत्र की दिशा मे । तीसरी खास बात यह है कि जर्मनी के संयंत्र अभी चालू है तथा दस वर्ष बाद बन्द करने की योजना है। जर्मनी अपनी योजना बदल भी सकता है । हमारी हालत अलग है। हमे अभी संयंत्र लगाने है। हम यदि नही लगायेंगे तो हम नीति बदल भी नही सकतें। जमर्नी के समक्ष तत्काल संकट नही हैं तथा दस वर्ष बाद भी उसके विकल्प खुले है जबकि भारत के पास तत्काल संकट है तथा दस वर्ष बाद भी विकल्प बन्द हो रहे है। इसलिये जर्मनी से भारत की तुलना और अनुकरण नही करना चाहिये।

एक बात और है कि विश्व में भूकम्प के डर से परमाणु संयत्र बन्द करने की कोई भगदड नही मची है। एक जर्मनी ने बन्द करने की मंशा जाहिर की है । वह भी सौर उर्जा के साथ । यह कोई ऐसी बात नही कि हम तत्काल ही दौड पड़ें। भारत मे किसी भी विषय की समीक्षा करने का स्वभाव ही नही रहा। तुरन्त ही किसी भी विषय पर पक्ष विपक्ष मे गुट बन जाते है और ऐसे गुट गिरोह मे बदल जाते है। ये गिरोह तिल का ताड़ बनाकर अपना कथन सिद्ध करने मे किसी भी सीमा तक लग जाते है। ये न कुछ सुनना चाहते है न समझना चाहते है। परमाणु उर्जा के विरोध मे उठी आवाज मे भी कुछ ऐसी आवाजें शामिल है जो स्वाभाविक न होकर प्रायोजित है। ऐसे लोग किसी भी हालत मे भारत की उर्जा खपत को तो बढते हुए देखना चाहते है किन्तु विधुत उत्पादन मे हर समय रोड़ा अटकाते रहते हैं। यदि उर्जा की खपत कम करने का कोई

भी प्रयास होता है तो ये लोग उर्जा का मूल्य बढने ही नही देते क्योकि उर्जा का मूल्य बढने का सर्वाधिक प्रभाव उन्ही सम्पन्न लोगो पर ज्यादा पडता है। जो इसका ज्यादा उपयोग करता है। उर्जा की खपत ज्यादा करने वालों का जीवन स्तर प्रतिवर्ष आठ से सोलह प्रतिशत तक बढ रहा है। यदि हम उन्नीस सौ सैतालीस के एक रूपये को आधार माने तो आज तिरसठ वर्ष बाद भी पेट्रोल का मूल्य एक रूपया सत्तर पैसा मिट्टी तेल का मूल्य सिर्फ अस्सी पैसा ,डीजल का एक रूपया पचीस पैसा तथा बिजली का एक रूपया पैतालीस पैसा हुआ है। इसके विपरीत यदि उस समय औसत जीवन स्तर एक था और कुल आबादी के तीन भाग गरीब तेतीस प्रतिशत , मध्यम तेतीस प्रतिशत तथा सम्पन्न तेतीस प्रतिशत मे बाटे तो पिछले साठ वर्षो मे जीवन स्तर मे एक की तुलना मे गरीब का एक दशमलव आठ , मध्यम वर्ग आठ दशमलव दो तथा सम्पन्न का चौसठ गुना बढा है । कल्पना करिये कि मध्यम वर्ग का भी जीवन स्तर आठ गुना और बिजली का मूल्य एक रूपया पैतालीस पैसा मात्र ही बढा है। अमीर आदमी, जो बिजली की ज्यादा खपत करता है उसके जीवन स्तर सुधार की तुलना मे बिजली का मूल्य नगण्य ही है। मै जो आंकडे दे रहा हूँ ये मेरे आंकडे न होकर सरकारी रेकार्ड से है । इनमे कही मामूली सा गणितीय हेर फेर संभव है। इस संबंध मे विस्तार से मै अपने लेख महगांई यथार्थ नही मात्र शव्द जाल मे लिखूंगा या कोई प्रश्न होगा तो और समझा दूंगा।

एक प्रश्न उठता है कि भारत के अनेक बुद्धिजीवी विजली उत्पादन वृद्धि के इतने खिलाफ क्यों रहते है। मुझे ऐसा लगता है कि भारत के वुद्धिजीवी विद्वानो का एक बडा वर्ग साम्यवाद से संचालित है। साम्यवाद पेशेवर तरीके से अमेरिका विरोधी है। पिछले बीस वर्षो से साम्यवादियों की आर्थिक मजबूरी भी खाडी देशों की ओर झुकी है तथा राजनैतिक भी। खाडी देश सब कुछ सहन कर सकते है किन्तु डीजल, पेट्रोल गैस का बिजली मे बदलना बरदास्त नही कर सकते क्योकि एकमात्र यही तो उनकी अर्थव्यवस्था की रीढ है। इसके लिये खाडी के देश राजनैतिक व्लैक मेलिंग भी कर सकते है और आवश्यकता अनुसार गुप्त धन देकर भारत मे अपने एजेंट भी खडे कर सकते है । भारत का दुर्भाग्य है कि यहॉ हर चीज बिकाउ है। कुछ विद्वान ही ऐसे है जो सुरक्षा कारणो से परमाणु विजली का विरोध करते है अन्यथा अधिंकांश ऐसे है जो किसी न किसी बहाने बिजली उत्पादन का विरोध करते है चाहे वह कारखाना परमाणु बिजली का हो या कोयला आधारित । कुछ लोग तो पन बिजली योजना तक का विरोध करते देखे जाते है। सोचने की बात है कि ऐसे लोगों को यदि खाडी देशो से कोई प्रोत्साहन नहीं है तो वे क्यो हर मामले मे इतनी दौड धूप करते है।

मेरे विचार मे भारत की सभी आर्थिक समस्याओं का प्रमुख कारण है डीजल पेट्रोल मिट्टी तेल गैस आदि की आयात वृद्धि । यदि हम इन सबका मूल्य बढा दे और बिजली बनाने मे ताकत लगा दे तो आयात मे उल्लेखनीय कमी संभव है । मै परमाणु उर्जा का समर्थक नहीं। मै तो चाहता हूँ कि मानवीय उर्जा की मांग बढे और कृत्रिम उर्जा का मूल्य बढे । किन्तु मै डीजल पेट्रोल की उर्जा के ज्यादा खिलाफ हूँ बिजली की अपेक्षा कोयला, कोयला की अपेक्षा परमाणु तथा परमाणु की अपेक्षा सौर उर्जा के पक्ष मे हूँ । जो लोग परमाणु उर्जा के विरूद्ध है किन्तु डीजल पेट्रोल गैस पर चुप है उनकी नीयत मे खोट है। ऐसे खराब नीयत वालों की पोल खुलनी चाहिये।

नोट–

आप शुल्क भेंजना चाहे तो चेक न भेजे क्योकि 100 रूपये के चेक को कैस कराने मे 50 रूपया खर्च आ जाता है। मनिआर्डर भेजना सबसे आसान है ।

पत्र व्यवहार या मनिआर्डर बनारस चौक अम्बिकापुर सरगुजा छत्तीसगढ भेजना ज्यादा अच्छा है। वैसे रामानुजगंज से भी कोई दिक्कत नही है।

पिछले दो महिनो मे प्राप्त राशि–

शिवकुमार खंडेलवाल सेक्टर–14 सोनीपत से 300 रू0, भारत भूषण गर्ग गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, आचार्य धर्मेश्वर नंद सरस्वति गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, राहुल उपाध्याय गाजियाबाद उ0प्र0 से 100रू0, वेद प्रकाश प्रजापति गाजियाबाद उ0प्र0 से 100रू0, अमर पाल सिंह आर्य गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, बीर ब्रम्हा सिंह माथुर गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, महेश आर्य गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, श्री पप्पु जी चक्की वाले गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, श्री जगमाल सिंह गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, श्री पवन शर्मा बहादुर गंज गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, मूल चंद्र आर्य बहादुरगंज गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0 चंद्र प्रकाश पटवारी गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, अशोक कुमार लोधी गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, विक्रान्त भारती गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, सत्य विर सिंह गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, अजय दादा गाजियाबाद उ0प्र0 से 100 रू0, रमेश चंद्र जोशी उज्जैन म0प्र0 से 500 रू0, सिंहासन तिवारी गोपालगंज बिहार से 100 रू0, चिन्मय व्यास देहरादुन , से 100, चितरंजन भारती आसाम से 100 रू0, रामेश्वर गुप्ता सीतापुर छ0ग0 से 50 रू0 की राशि प्राप्त हुई है।